सत्र 2

विचारों, अंत:करण धर्म या आस्था की आजादी (FORB) का परिचय

बांसुरी और नगाड़े के गीत

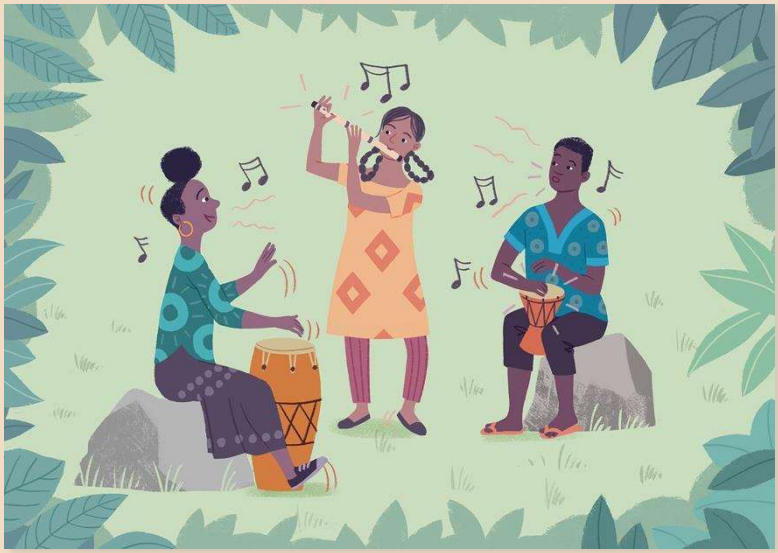

THE LOCAL
CHANGEMAKERS
COURSE

बांसुरी और नगाड़े के गीत

कैथरीन कैश (Katherine Cash) और सिडसेल-मैरी विन्थर प्राग (Sidsel-Marie Winther Prag) द्वारा लिखित
टोबी न्यूसम (Toby Newsome) द्वारा चित्रित

यह कहानी 'एक बार की बात है' अभ्यास की आधारशिला है और सत्र 2 की पावरपॉइंट प्रस्तुति की स्लाइड 3 से 23 तक में चित्रित की गई है.

बांसुरी और नगाड़े के गीत

एक समय की बात है, दो गांव थे.

जंगल में बसे गांव के लोग नगाड़े बजाने और नाचने के लिए मशहूर थे. जैसे ही कोई बच्चा बैठना शुरू करता, उसे नगाड़ा थमा दिया जाता. छोटे-छोटे नगाड़े होते थे जो शांत बारिश की फुहार की तरह बजते थे और बड़े-बड़े गरजने वाले नगाड़े होते थे जिन्हें उठाने के लिए दो लोगों की ज़रूरत होती थी. नगाड़े बजाना जीवन के साथ-साथ चलता था - उत्सव, शोक और इनके बीच की हर चीज़ - और लोगों का मानना था कि नगाड़े बजाने से उनका जीवन जंगल की आत्माओं के साथ सद्भाव में रहता है.

नीचे घाटी में बसे गांव के लोगों ने नगाड़े बजाने वालों को कभी नहीं समझा था. उन्हें नगाड़े बजाना दखलंदाज़ी लगता था और वे बस 'पीटने' की आवाज़ पर हँसते थे. जब इस गांव में कोई लड़का पैदा होता था, तो उसके पिता लकड़ी या हड्डी से एक बांसुरी बनाते थे और लड़का अपने जीवन के अंत तक इसे अपने गले में एक तार के साथ लटकाए रखता था. उनकी पारंपरिक धुनों में निपुणता प्राप्त करने में वर्षों लगते थे, और सबसे बड़ा सम्मान उन पुरुषों को दिया जाता था जिनकी बांसुरी इतनी मधुर गूंजती थी कि स्वर्ग के देवता भी मोहित हो जाते और खेतों के लिए वर्षा और धूप का वरदान देते.

हालाँकि नगाड़े वाले गाँव के ग्रामीण अपना सामान बेचने के लिए बांसुरी गाँव के साप्ताहिक बाज़ार में जाते थे, लेकिन दोनों गांवों के लोग आपस में घुलते-मिलते नहीं थे. बाजार में नगाड़ा बजाना प्रतिबंधित था. बांसुरी गाँव के कई स्टॉल मालिकों ने नगाड़ा बजाने वालों को सामान बेचने से इनकार कर दिया और नगाड़ा बजाने वाले बांसुरी गाँव वालों से नाराज़ थे.

एक छोटी लड़की, ज़ियाना नाम की एक अकेली बच्ची, बांसुरी गाँव में रहती थी. उसकी जिज्ञास और दयालुता ने उसे सभी का प्रिय बना दिया. जब वह 10 साल की थी, तो उसके पिता बीमार पड़ गए. एक दिन, उन्होंने उसे अपने पास बुलाया, "मेरी प्यारी बेटी, मैं ज़्यादा दिनों तक नहीं जीऊँगा. मेरी बांसुरी ले लो और इसे पहन लो ताकि हम हमेशा साथ रहें." यह सुनकर ज़ियाना को बहुत अजीब-सा लगा क्योंकि उस गांव में लड़कियों के लिए बांसुरी रखना प्रथागत नहीं था. लेकिन थोड़ी देर में उसने खुद से पूछा, "मुझे बांसुरी बजाने का अधिकार क्यों नहीं होना चाहिए?' जिस रात उसके पिता का निधन हुआ, ज़ियाना ने बांसुरी उठाई और उसे अपनी गर्दन में पहन लिया.

जैसे-जैसे ज़ियाना बड़ी हुई, वह अपनी माँ की मदद करने में जुट गई - खेतों में सब्ज़ियाँ उगाने से लेकर उन्हें बाज़ार में ठेले पर बेचने तक. हालाँकि ज़ियाना मेहनती और दयालु थी, फिर भी उसके गाँव के लोग अक्सर उसकी बांसुरी पहनने की वजह से उसका मज़ाक उड़ाते थे. कभी-कभी लोग उसे समझाने की कोशिश करते कि वह बांसुरी उतार दे - पर ज़ियाना अडिग रहती. जब भी उसे मौका मिलता, ज़ियाना जंगल में भाग जाती और अपने पिता की बांसुरी बजाती.

ऐसे ही एक दिन, ज़ियाना ने नगाड़े की हल्की सी आवाज़ सुनी. उत्सुकतावश वह जंगल के भीतर नगाड़े की थापों का पीछा करती हुई एक खुली जगह तक पहुँची, जहाँ एक युवक नगाड़ा बजा रहा था और गा रहा था, जबकि उसकी बहन पेड़ से फल तोड़ रही थी. ज़ियाना ने उन्हें बाज़ार से पहचाना - वे भाई-बहन थे, जिनका नाम ओनो और आइरिस था.

ज़ियाना एक पेड़ के पीछे छुप गई और बांसुरी बजाकर उनका साथ देने लगी. बांसुरी की धुन और नगाड़ा की ताल एक-दूसरे के साथ लयबद्ध होकर सुंदर संगीत में झूम उठे.

गाना खत्म होने के बाद, ज़ियाना डरते-डरते खुले स्थान में गई. ओनो और आईरिस बांसुरी वाली लड़की देखकर चकित रह गए लेकिन जैसे ही उन्हें यह एहसास हुआ कि उसे भी उनकी तरह बांसुरी वाले गांव में बांसुरी बजाने की इजाजत नहीं होगी, वे मुस्कुराने लगे. आईरिस ने ज़ियाना को कुछ फल पेश किए और तीनों ने शाम घिरने तक बातें कीं और संगीत बजाया.

अगले हाट के दिन ज़ियाना ने अपने नए दोस्तों को एक चाय की दुकान के सामने देखा. दुकान का मालिक उनसे चिल्लाकर कह रहा था, "दूर हटो नगाड़े वाले गंदे लोग!" यह सुनकर ओनो नाराज हुआ किंतु आईरिस उसे खींचकर दूर ले गई. दुकान के मालिक का बेटा, जो ओनो के लिए चाय भर रहा था, लज्जित महसूस कर रहा था.

ज़ियाना ने कभी "नगाड़े वाले वर्जित हैं" के बोर्ड की ओर ध्यान नहीं दिया था. इस एहसास से उसका मन भारी हो गया कि उसने और उसकी मां ने कभी नगाड़े वालों की दुकानों से कुछ नहीं खरीदा था.

उस रात ज़ियाना ने अपनी माँ से बात की और पूछा कि वे कभी नगाड़े वालों के स्टॉल पर क्यों नहीं गए. "जो आप जानते हैं, उसी पर टिके रहना बेहतर है," उसकी माँ ने जवाब दिया, लेकिन ज़ियाना समझ नहीं पाई और पूछती रही कि हर किसी का हर जगह स्वागत क्यों नहीं किया जाना चाहिए और ओनो और आइरिस के स्टॉल पर बिकने वाले स्वादिष्ट फलों की तारीफ करती रही. आखिरकार, ज़ियाना की माँ अगले बाज़ार के दिन उनके कुछ फल खाने के लिए सहमत हो गई.

इस बीच चाय की दुकान वाले के घर पर झगड़ा शुरू हो गया जब मालिक के बेटे ब्रोन ने नगाड़े वालों के साथ उसके पिता के व्यवहार पर सवाल उठाया. दुकान का मालिक गांव का अत्यंत सम्मानित बांसुरी वादक और गौरवान्वित व्यक्ति था. उसके पिता एवं दादा भी कुशल वादक रहे थे लेकिन उसके बेटे से बहुत निराशा हाथ लगी थी. बहुत कोशिशों के बाद भी ब्रोन साधारण धुनें भी नहीं सीख सका था. कई साल तक थोपे गए अभ्यास और कड़वी टिप्पणियों के बाद बांसुरी ब्रोन के दिल से उतर गई. उसे दूर से सुनाई देने वाली नगाड़ों की आवाज़ें आकर्षित करती थीं और वह एक अलग तरह की जिंदगी का सपना देखता था.

समय बीतता गया, ज़ियाना, आईरिस और ओनो जंगल में मिलते रहे और एक साथ मिलकर संगीत बजाते रहे. वे भी सपना देखते थे - एक ऐसे दिन का जब सबका हर जगह स्वागत होगा, जब कोई भी खुलकर नगाड़े और बांसुरी बजा सकेगा और जब वे एक साथ मिलकर बाज़ार में सुन्दर संगीत का सृजन कर सकेंगे.

हर हफ्ते, ओनो और आईरिस, ज़ियाना और उसकी माँ की सब्जी की दुकान पर जाते थे और ज़ियाना की मां, उनसे फल और मेवे खरीदती. एक दिन ओनो की नज़र ज़ियाना की मां पर पड़ी, जो उसके बेल्ट में बंधे नगाड़े को ध्यान से देख रही थी.

"ये हँसने वाला नगाड़ा है," ओनो के उन्हें बताया. "इसकी धुन खुशियाँ लाती है और जब मैं इसे बजाता हूँ तो बच्चे खूब हँसते और नाचते हैं." ज़ियाना की माँ मंत्रमुग्ध हो गई थीं.

जल्दी ही अन्य नगाड़ा वादक भी वहां इकट्ठा हो गए और ज़ियाना की माँ ने उनसे भी उनके नगाड़ों के बारे में पूछा. उस दिन, ज़ियाना की मां की सारी सब्जियां बहुत जल्दी बिक गईं. पड़ोस के दुकानदार उससे नाराज़ थे क्योंकि वह अपनी दुकान पर नगाड़े वालों का स्वागत कर रही थी, लेकिन ज़ियाना की माँ का कहना था अगर सब लोग एक-दूसरे से सामान खरीद सकेंगे तो यह सब के लिए अच्छा होगा.

उनकी दुकान के बगल में एक बुजुर्ग व्यक्ति मसाले बेच रहा था परन्तु उसका धंधा ठीक से नहीं चल रहा था. ओनो ने सुझाव दिया कि उसे अपना व्यापार बढ़ाने के लिए एक बोर्ड लगाना चाहिए जिस पर लिखा हो, "सभी का स्वागत है" और उसने बुजुर्ग आदमी के लिए एक सुन्दर सा बोर्ड बना भी दिया जिस पर नगाड़े और बांसुरी के चित्र भी बने थे.

बूढ़े आदमी की बिक्री बढ़ गई, और धीरे-धीरे अन्य स्टॉल मालिक भी आश्वस्त हो गए. इम बजाने वालों और बांसुरी बजाने वालों के स्वामित्व वाले स्टॉल पर "सभी का स्वागत है" का चिन्ह दिखाई देने लगा. बाजार में रौनक बढ़ गई.

परन्तु सब कुछ ठीक नहीं था. ब्रोन के पिता यह देखकर बहुत कुपित हो गए कि नगाड़े वाले बाज़ार के उनके हिस्से में घुस रहे हैं. उन्हें लगा कि यह उनके पुराने तौर तरीके के लिए खतरा है. उन्होंने अपने जैसी सोच रखने वालों को इकठ्ठा किया और वे मिलकर बोर्डों को उखाड़ कर फेंकने लगे और नगाड़े वालों को तंग करने लगे. इससे बाज़ार में तनाव फैल गया और बाज़ार समिति चिंतित हो गई.

ब्रोन ने अपने पिता का साथ देने से इंकार कर दिया. बल्कि उसने और बुजुर्ग मसाला विक्रेता ने बाज़ार समिति से बात की और उसे इस बात के लिए राजी किया कि वो बाज़ार में सभी के लिए एक संगीत सम्मलेन का आयोजन करवाए. उनका सोचना था कि अगर ब्रोन के पिता और उनके जैसे दूसरे लोग, नगाड़े वालों के बारे में जानेंगे और उनका संगीत सुनेंगे तो शायद वे उन्हें स्वीकार करना शुरू कर दें.

संगीत सम्मलेन की खबर चारों तरफ फैल गई और लोग दूर-दूर से बाज़ार पहुंचे. उस दिन, दुकानदारों की अन्य दिनों के अपेक्षा काफी बिक्री हुई.

आखिरकार, संगीत कार्यक्रम का समय आ गया. बूढ़े मसाला विक्रेता ने अपनी लकड़ी की बांसुरी पर एक सुंदर धुन बजाई, जबकि उसकी बेटी अच्छी फसल के लिए स्वर्ग के भगवान के प्रति आभार व्यक्त करते हुए एक गीत गा रही थी. उन्होंने बताया कि युवावस्था में वर्षों की कठिनाइयों के बाद यह गीत उनके लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों था.

ब्रोन के पिता ने भीड़ में कुछ नगाड़े वालों की मुस्कान और सिर हिलाते हुए देखा तो भौंहें चढ़ा दीं.

बूढ़े व्यक्ति ने ओनो और आइरिस को मंच पर आमंत्रित किया. उन्होंने अपने नगाड़े की कहानियाँ सुनाईं और जंगल की धारा की नाचती आत्मा के सम्मान में चंचल धुनें बजाईं, और तूफ़ान की आत्मा का आभार व्यक्त करने के लिए गूंजते हुए गीत गाए, जिसने उनके फलदार पेड़ों की रक्षा की थी. पहली बार, बांसुरी वाले ग्रामीणों को समझ में आने लगा कि नगाड़े वालों के लिए नगाड़े का क्या मतलब है. ब्रोन के पिता ने मुँह बिचकाया.

आखिरकार, ज़ियाना मंच पर ओनो और आइरिस के साथ शामिल हो गई. उसने अपने पिता के बारे में सोचा, उनकी बांसुरी अपने होठों से लगाई और तीनों ने एक साथ गाना बजाना शुरू कर दिया. एक चौंका देने वाला सन्नाटा छा गया. इससे पहले कभी भी बांसुरी और नगाड़ा एक साथ नहीं सुने गए थे या किसी लड़की को बांसुरी बजाते हुए नहीं देखा गया था.

ज़ियाना की बांसुरी से धूप और बारिश के लिए आभार की धुन हवा में तैर रही थी, ओनो के नगाड़े से निकलती नाचती धारा की लय के साथ तालमेल बिठाती हुई.

गाना खत्म हुआ और भीड़ एक दूसरे की तरफ देखने लगी. कुछ लोग झिझकते हुए ताली बजा रहे थे जबकि अन्य दूसरी तरफ देख रहे थे. ब्रोन के पिता ज़ियाना पर भड़क उठे. "गद्दार!" वे चिल्लाए और गुस्से में चले गए.

ब्रोन ने अपने पिता की ओर देखा. उसके चेहरे पर दुख के बादल थे. अपना सिर हिलाते हुए उसने बांसुरी गले से उतारी और उसे अपने पिता की दुकान पर रख कर वो हमेशा के लिए गाँव छोड़ कर चला गया.

संगीत सम्मलेन के बाद दोनों गांवों में खूब बहस-मुबाहिसे हुए. क्या बाज़ार की सभी दुकानों से सब को सामान बेचा जाना चाहिए? क्या लड़कियों को बांसुरी बजाने की इजाज़त होनी चाहिए और क्या बांसुरी और नगाड़े को एक साथ बजाया जाना चाहिए? कई महीने बीत गए पर गाँव वाले फिर भी कोई राय नहीं बना पाए.

नगाड़े वालों के अनुभव सुनने के बाद और सब लोगों की नेकनीयत को देखते हुए, बाज़ार समिति ने यह फैसला सुनाया:

"बाज़ार में सभी लोगों के साथ एक-सा व्यवहार होगा!"

नगाड़े बजाने पर रोक उठा ली गई और "नगाड़े वाले वर्जित हैं" के बोर्ड हटा दिए गए. जहाँ तक बाजे बजाने का सवाल था, समिति ने किसी का भी पक्ष नहीं लिया. उसने सिर्फ यह कहा कि हर व्यक्ति की आस्था का सम्मान होगा और वे उस विश्वास के अनुरूप अभ्यास कर सकेंगे.

नगाड़े वालों को यह महसूस होने में कई साल लग गए कि उनका हर दुकान पर स्वागत है, परन्तु हर हफ्ते, ज़ियाना, ओनो और आईरिस एक साथ बांसुरी और नगाड़े के गीत बजाते रहे जब तक कि उनकी उँगलियाँ अकड़ नहीं गईं और उनके बाल सफ़ेद नहीं हो गए.